लेखक : हृतिक मिश्र

॥ श्रीपरशुराम पूजन विधि ॥

श्रीपरशुराम पूजन

निम्न मन्त्र उच्चारित कर फिर आसन बिछाकर उसपर बैठना चाहिए :

विष्णुना त्वं धृता पृथ्वि ! सर्वे लोकास्त्वया धृताः ।
अतः सर्वं सहे देवि वस्तुं मे स्थानमुत्तमम् ॥

आसन शुद्धिकरण-

हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़कर जल छोड़ दे-

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः ॥

अब दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे तत्पश्चात्
उस जल को अंगुलियों के मध्य के छिद्रों से अपने आसन पर छिड़के :

पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

शिखा बन्धन-

अब निम्न मन्त्र से शिखा बांध ले :

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते ।

तिष्ठ देवि शिखाबन्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे ॥

पवित्रीधारण-

विरिञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठि निसर्गजः । नुद सर्वाणि पापानि पवित्रं धारयाम्यहम् ॥

अब उपरोक्त मंत्र से तीन कुशों से निर्मित पवित्री बाई अनामिका अंगुली के तथा दो कुशों से निर्मित पवित्री दाहिनी अनामिका अंगुली के मूल में धारण कर ले। यदि पवित्री उपलब्ध न हो सके तो स्वर्ण की अँगूठी भी धारण कर सकते हैं। फिर अपने दक्षिण हस्त में जल लेकर आगे वर्णित पवित्रीकरण मन्त्र का उच्चारण करे॥

पवित्रीकरण मन्त्र-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

अब अपनी मध्यमा तथा अनामिका अँगुली के द्वारा उस जल को **पुण्डरीकाक्ष: पुनातु, पुण्डरीकाक्ष: पुनातु, पुण्डरीकाक्ष: पुनातु** इन मन्त्रों का एक-एक बार उच्चारण करते हुए कुल तीन बार अपने ऊपर तथा पूजन सामग्री पर छिड़क ले।

अब निम्न मन्त्रों के द्वारा तीन बार आचमन करे :

केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः ।

अब **"गोविंदाय नम:"** इस मन्त्र का उच्चारण कर अँगूठे के मूल भाग के द्वारा ओष्ठों को दो बार पोंछ ले तत्पश्चात् **"हृषीकेशाय नम:"** मन्त्र के द्वारा हस्त प्रक्षालन करके फिर अपने दक्षिण अंगुष्ठ के द्वारा अपनी नाक, अपने नेत्रों तथा अन्त में अपने दोनों कर्णों का स्पर्श करे।

प्राणायाम-

अब मन में **परशुराम** का उच्चारण करते हुए तथा भगवान के ध्यानपूर्वक तीन प्राणायाम करे॥

ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण-

ललाट में केशव का ध्यान करते हुए 'श्री केशवाय नम:'

इसी प्रकार उदर पर 'श्री नारायणाय नम:'

वक्षस्थल में 'श्री माधवाय नमः'

कण्ठ में 'श्री गोविन्दाय नमः'

उदर के दाहिने भाग में 'श्री विष्णवे नम:'

दक्षिण बाहु में 'श्री मधुसूदनाय नमः'

दाहिने कन्धे पर 'श्री त्रिविक्रमाय नमः'

उदर के वाम भाग में 'श्री वामनाय नमः'

वामबाहु में 'श्री श्रीधराय नमः'

वाम कन्धे में 'श्री हृषीकेशाय नमः'

पीठ पर 'श्री पद्मनाभाय नमः'

तथा पीठ के उपरिस्थ भाग में 'श्री दामोदराय नम' से ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करना चाहिए॥

पद्म महापुराण, उत्तर खण्ड, अध्याय दो सौ पच्चीस के अनुसार ब्राह्मण को बारह ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करने चाहिए। क्षत्रिय को ललाट, वक्ष:स्थल तथा दोनो बाहुओं पर अर्थात् चार ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करने चाहिए। वैश्य को ललाट और वक्षःस्थल में अर्थात् दो ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करने चाहिए तथा शूद्र और स्त्री को बस ललाट पर एक ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करना चाहिए। ऊर्ध्वपुण्ड्र सदा छिद्र सहित ही धारण करें तथा सभी को ऊर्ध्वपुण्ड्रों के छिद्रों के मध्य पवित्र हल्दी धारण करनी चाहिए तथा ऊर्ध्वपुण्ड्र सदा उंगली से लगाना चाहिए न कि डंडी आदि से॥

श्री धारण-

अब निम्न मन्त्रों से जितने ऊर्ध्वपुण्ड्र धारण करे हों उनके मध्य हल्दी धारण करे :

१. श्रीदेव्यै नमः। २. अमृतोद्भवायै नमः। ३. कमलायै नमः। ४. चन्द्रशोभितायै नमः।

५. वरारोहायै नमः। ६. हरिवल्लभायै नमः। ७. विष्णुपत्न्यै नमः। ८. वैष्णव्यै नमः।

९. शार्ङ्गिण्यै नमः। १०. देवदेव्यै नमः। ११. लक्ष्म्यै नमः १२. सर्वसुन्दर्यै नमः॥

देवता नमस्कार-

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।

इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः ।

श्रीमहाकालीमहलक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपायै भगवत्यै श्रीदुर्गा देव्यै नमः ।

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः । सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥

श्रीगणेश तथा श्रीविष्णु स्मरण-

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

श्री विष्णवे नमस्तुभ्यम् ॥

सकाम संकल्प :

"अहमद्य मम आत्मनः ज्ञाताज्ञातसकलपापक्षयार्थं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं सकलकामनासिद्ध्यर्थं भगवान् श्रीपरशुरामप्रीत्यर्थं च श्रीपरशुरामपूजनं करिष्ये।"

निष्काम संकल्प :

"अहमद्य भगवान् श्रीपरशुरामप्रीत्यर्थं श्रीपरशुरामपूजनं करिष्ये।"

पुनः हाथ में जल ग्रहण कर निम्न संकल्प करे :

तत्रादौ दिग्रक्षणं कर्मकलशार्चनं दीपशंखघंटापूजनं श्रीगणेशपूजनं च करिष्ये।

दिग्रक्षण-

अब निम्न मंत्रों का उच्चारण कर तत्पश्चात् तीन बार अपनी बाईं एड़ी द्वारा पृथ्वी का ताड़न करे फिर वाम हस्त में जल लेकर दाहिनी अनामिका द्वारा उसका नेत्रों से स्पर्श कराए :

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् । सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

श्री भैरव नमस्कार-

अब निम्न मन्त्र से भैरव जी को नमस्कार कर उनसे पूजन करने की आज्ञा ग्रहण करे :

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम ।

भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

कर्मकलशार्चन-

अपने वाम भाग में अक्षत पुञ्ज पर स्थापित करे हुए कलश में वरुण देव का आवाहन करे :

मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् । आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ॥

वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि॥

अब निम्न मन्त्र से दक्षिण हस्त की अनामिका द्वारा कलश का स्पर्श करते हुए गङ्गादि का आवाहन करे तत्पश्चात् उनका पूजन कर प्रार्थना करे :

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

ऋग्वेदाय नमः । यजुर्वेदाय नमः । सामवेदाय नमः । अथर्ववेदाय नमः ।

अप्पतिवरुणाय नमः । गङ्गादिनदीभ्यो नमः । सप्तसागरेभ्यो नमः । सर्वतीर्थेभ्यो नमः ।

आवाहयामि, स्थापयामि॥

पूजन-

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि॥

प्रार्थना-

'जलाधिप नमस्तुभ्यं नमस्ते पद्मिनीप्रिय । पूजाकर्मसमृद्ध्यर्थं पात्रेऽस्मिन् सुस्थिरो भव ॥

वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। प्रार्थनां समर्पयामि ॥

प्रोक्षण-

अब कलश का दक्षिण हस्त से आच्छादन कर **'वं वरुणाय नमः'** इस मन्त्र का आठ बार उच्चारण कर जल को अभिमंत्रित करे तत्पश्चात् कलश के जल से जल लेकर आगे वर्णित मन्त्र से कुश के द्वारा **"पुण्डरीकाक्ष पुनातु:, पुण्डरीकाक्ष पुनातु:, पुण्डरीकाक्ष पुनातु:"** यह एक-एक बार बोलते हुए कुल तीन बार स्वयं पर तथा पूजन सामग्री पर वह जल छिड़क ले :

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

कुश के अभाव में यह कर्म मध्यमा तथा अनामिका से करे।

दीप प्रज्वलन तथा पूजन-

अब गणपति का स्मरण कर एक दीपक अगर घी का अथवा सरसों के तेल का हो तो अपने दाहिनी ओर और तिल के तेल का हो तो बाईं ओर (घी तथा सरसों के तेल के दीपक में श्वेत बत्ती डालें तथा तिल के तेल के दीपक में लाल रंग की बत्ती डालें) किसी आधार पर रख प्रज्वलित करके निम्न मंत्र से दीपस्थ देव की पूजा करे :

दीपस्थदेवतायै नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र के द्वारा दीप की प्रार्थना करे :

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् । यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ॥

दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन दीपः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

शङ्ख पूजन-

अब अपने दक्षिण भाग में स्थापित कर्मकलश के जल से प्रक्षालित करे हुए शंख में गन्ध, पुष्पादि डालकर उसे कर्मकलश के जल से भर दे तत्पश्चात् उसका पूजन करे :

शङ्खस्थ देवतायै नमः। आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब पुनः शंख में तुलसी, गन्ध तथा पुष्प डालकर उसकी प्रार्थना करे :

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे । नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य ! नमोऽस्तु ते ॥

अब दक्षिण हस्त में जल लेकर **अनेन पूजनेन शङ्खः प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

घण्टा पूजन-

निम्न मन्त्र से घण्टे की प्रार्थना कर घण्टा वादन करे फिर उसे उसके स्थान पर स्थापित कर दे :

सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः ॥

आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम् ।

कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ ॥

अब निम्न मन्त्र से गरुड़ जी का आवाहन कर उनका पूजन कर उन्हें नमस्कार करे।

घण्टास्थगरुडाय नमः । आवाहयामि, सर्वोपचारार्थे

गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

अब निम्न मन्त्र से गरुड़ जी की प्रार्थना करे :

पक्षिराज नमस्तुभ्यं श्रीविष्णोः प्रियवाहन ।

रक्षोभयमपाकृत्य सर्वविघ्नान् निवारय ॥

पूर्ववत् जल लेकर **अनेन पूजनेन घण्टास्थगरुड: प्रीयतां** यह उच्चारित कर जल छोड़ दे।

आत्मपूजा-

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर उन अक्षतों को स्वयं पर छोड़े :

देहो देवालयः प्रोक्तः जीवो देवः सनातनः । त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥

आत्मने नमः । आत्मपूजां समर्पयामि ॥

श्रीगणेश पूजन

सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीगणेशाय नमः । आवाहयामि,

सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ॥

॥ इति श्री ॥

श्रीपरशुराम मानसिक पूजन

ध्यान-

सात्त्विकं श्वेतवर्णं च भस्मोद्धूलितविग्रहम् ।
अग्निहोत्रस्थलासीनं नानामुनिगणावृतम् ॥
कम्बलासनमारूढं स्वर्णतारकुशाङ्गुलिम् ।
श्वेतवस्त्रद्वयोपेतं जुह्वन्तं राममाश्रये ॥

श्रीपरशुरामाय लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि ।
श्रीपरशुरामाय हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि ।
श्रीपरशुरामाय यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि ।
श्रीपरशुरामाय रं वह्न्यात्मकं दीपं परिकल्पयामि ।
श्रीपरशुरामाय वं अमृतात्मकं नैवेद्यं परिकल्पयामि ।
श्रीपरशुरामाय सर्वात्मकं नमस्कारान् परिकल्पयामि ॥

॥ इति श्रीपरशुराम मानसिक पूजन ॥

श्री परशुराम पूजन

ध्यान-

शुद्धजाम्बूनदनिभं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् । सर्वाभरणसंयुक्तं कृष्णाजिनधरं विभुम् ॥

बाणचापौ च परशुमभयं च चतुर्भुजैः । प्रकोष्ठशोभि रुद्राक्षैर्दधानं भृगुनन्दनम् ॥

हेमयज्ञोपवीतं च स्निग्धस्मितमुखाम्बुजम् । दर्भाञ्चितकरं देवं क्षत्रियक्षयदीक्षितम् ॥

श्रीवत्सवक्षसं रामं ध्यायेद्वै ब्रह्मचारिणम् । हृत्पुण्डरीकमध्यस्थं सनकाद्यैरभिष्टुतम् ॥

सहस्रमिव सूर्याणामेकी भूय पुरः स्थितम् । तपसामिव सन्मूर्तिं भृगुवंशतपस्विनम् ॥

चूडाचुम्बितकङ्कपत्रमभितस्तूणीद्वयं पृष्ठतो

भस्मस्निग्धपवित्रलाञ्छनवपुर्धत्ते त्वचं रौरवीम् ।

मौञ्ज्या मेखलया नियन्त्रितमधोवासश्च माञ्जिष्ठकम्

पाणौ कार्मुकमक्षसूत्रवलयं दण्डं परं पैप्पलम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। ध्यायामि, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि॥

आवाहन-

आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव ।

यावत्पूजां करिष्येऽहं तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥

श्रीपरशुराममावाहयामि । आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ॥

आसन-

आसनं सर्वशोभाढ्यं सद्रत्नमणिनिर्मितम्। विचित्रं च विचित्रेण गृह्यतां शोभनं हरे ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि ॥

पाद्य-

शङ्करादिजटादेयं भक्तैर्भक्त्या समर्पितम् । प्रेमपाथोधिसत्पाथः पाद्यं स्वीकुरु पादयोः ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। पाद्यं समर्पयामि ॥

अर्घ्य-

पुष्करादिषु तीर्थेषु गङ्गादिषु सरित्सु च। यत्तोयं तन्मयाऽऽनीतं दत्तमर्घ्यं गृहाण भो: ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमन-

सुगन्धवासितं तोयं बहुतीर्थसमुद्भवम् ।

आचमनार्थमानीतं गृहाण त्वं सुरेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। आचमनं समर्पयामि॥

स्नान-

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् । तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। स्नानं समर्पयामि॥

दुग्ध स्नान-

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। पय: स्नानं समर्पयामि॥

दधि स्नान-

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। दधि स्नानं समर्पयामि॥

घृत स्नान-

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। घृत स्नानं समर्पयामि॥

मधु स्नान-

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि॥

शर्करा स्नान-

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम् । मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि॥

पञ्चामृत स्नान-

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि॥

गन्धोदक स्नान-

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विनिःसृतम् । इदं गन्धोदकस्नानं कुङ्कुमाक्तं च गृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

अभिषेक-

श्रीमद्भागवतोक्त पुरुष सूक्त

सहस्रोर्वङ्घ्रिबाह्वक्षः सहस्राननशीर्षवान् ॥

यस्येहावयवैर्लोकान् कल्पयन्ति मनीषिणः । कट्यादिभिरधः सप्त सप्तोर्ध्वं जघनादिभिः ॥

पुरुषस्य मुखं ब्रह्म क्षत्रमेतस्य बाहवः । ऊर्वोर्वैश्यो भगवतः पद्भ्यां शूद्रोऽभ्यजायत॥

भूर्लोक: कल्पित: पद्भ्यां भुवर्लोकोऽस्य नाभितः ।

स्वर्लोक: कल्पितो मूर्ध्ना इति वा लोककल्पना ॥

अहं भवान् भवश्चैव त इमे मुनयोऽग्रजाः । सुरासुरनरा नागाः खगा मृगसरीसृपाः ॥

गन्धर्वाप्सरसो यक्षा रक्षोभूतगणोरगाः । पशवः पितरः सिद्धा विद्याध्राश्चारणा द्रुमाः ॥

अन्ये च विविधा जीवा जलस्थलनभौकसः । ग्रहर्क्षकेतवस्तारास्तडित: स्तनयित्नवः ॥

सर्वं पुरुष एवेदं भूतं भव्यं भवच्च यत् । तेनेदमावृतं विश्वं वितस्तिमधितिष्ठति ॥

स्वधिष्ण्यं प्रतपन् प्राणो बहिश्च प्रतपत्यसौ । एवं विराजं प्रतपंस्तपत्यन्तर्बहिः पुमान्॥

सोऽमृतस्याभयस्येशो मर्त्यमन्नं यदत्यगात्। महिमैष ततो ब्रह्मन् पुरुषस्य दुरत्ययः ॥

पादेषु सर्वभूतानि पुंस: स्थितिपदो विदुः । अमृतं क्षेममभयं त्रिमूर्ध्नोऽधायि मूर्धसु ॥

पादास्त्रयो बहिश्चासन्नप्रजानां य आश्रमाः । अन्तस्त्रिलोक्यास्त्वपरो गृहमेधोऽबृहद्व्रतः ॥

सृती विचक्रमे विष्वङ् साशनानशने उभे । यदविद्या च विद्या च पुरुषस्तूभयाश्रयः॥

यस्मादण्डं विराड् जज्ञे भूतेन्द्रियगुणात्मक: । तद् द्रव्यमत्यगाद् विश्वं गोभिः सूर्य इवातपन्॥

यदास्य नाभ्यान्नलिनादहमासं महात्मनः । नाविदं यज्ञसम्भारान् पुरुषावयवादृते ॥

तेषु यज्ञस्य पशवः सवनस्पतय: कुशाः । इदं च देवयजनं कालश्चोरुगुणान्वितः॥

वस्तून्योषधय: स्नेहा रसलोहमृदो जलम् । ऋचो यजूंषि सामानि चातुर्होत्रं च सत्तम ॥

नामधेयानि मन्त्राश्च दक्षिणाश्च व्रतानि च । देवतानुक्रमः कल्पः सङ्कल्पस्तन्त्रमेव च॥

गतयो मतय: श्रद्धा प्रायश्चित्तं समर्पणम् । पुरुषावयवैरेते सम्भाराः सम्भृता मया ॥

इति सम्भृतसम्भारः पुरुषावयवैरहम् । तमेव पुरुषं यज्ञं तेनैवायजमीश्वरम् ॥

ततस्ते भ्रातर इमे प्रजानां पतयो नव। अयजन् व्यक्तमव्यक्तं पुरुषं सुसमाहिताः॥

ततश्च मनव: काले ईजिरे ऋषयोऽपरे । पितरो विबुधा दैत्या मनुष्याः क्रतुभिर्विभुम् ॥

नारायणे भगवति तदिदं विश्वमाहितम्। गृहीतमायोरुगुणः सर्गादावगुण: स्वत: ॥

सृजामि तन्नियुक्तोऽहं हरो हरति तद्वशः । विश्वं पुरुषरूपेण परिपाति त्रिशक्तिधृक् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। अभिषेकं समर्पयामि॥

शुद्धोदक स्नान-

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम् । समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥

श्रीपरशुरामाय नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्र-

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि॥

उपवस्त्र-

यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति । उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मोपकारकम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि॥

यज्ञोपवीत-

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

आभूषण-

स्वभावसुन्दराङ्गाय नानाशक्त्याश्रयाय ते । भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि सुरार्चित ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। आभूषणानि समर्पयामि ॥

चन्दन-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। चन्दनं समर्पयामि॥

कुङ्कुम-

कुङ्कुमं कामनादिव्यं कामना काम सम्भवम्। कुङ्कुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। कुङ्कुमं समर्पयामि॥

अक्षत-

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि॥

पुष्पमाला तथा पुष्प-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि॥

तुलसी दल तथा मञ्जरी-

तुलसीं हेमरूपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् ।

भवमोक्षप्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। तुलसीदलं तुलसीमञ्जरीं च समर्पयामि॥

दूर्वा-

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥

परिमल द्रव्य-

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलद्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि॥

सुगन्धित तेल तथा इत्र-

तैलानि च सुगन्धीनि द्रव्याणि विविधानि च । मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि॥

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीपरशुरामाय नमः। धूपमाघ्रापयामि॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण देवेश ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। दीपं दर्शयामि॥

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च । आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीपरशुरामाय नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥

पूर्वापोशानादि-

पूर्वापोशानं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि।

उत्तरापोशानं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि।

मुखप्रक्षालनार्थं जलं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि॥

फल-

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव । तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। फलं समर्पयामि॥

करोद्वर्तन-

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम् ।

करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। करोद्वर्तनं समर्पयामि॥

ताम्बूल-

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। ताम्बूलं समर्पयामि॥

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। दक्षिणां समर्पयामि॥

आरार्तिक्य-

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।

आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। आरार्तिक्यं समर्पयामि॥

पुष्पाञ्जलि-

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।

पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

प्रार्थना-

यन्नामग्रहणाज्जन्तुः प्राप्नुयात्र भवापदम् ।

यस्य पादार्चनात्सिद्धिः स्वेप्सितां नौमि भार्गवम् ॥

निःस्पृहो यः सदा देवो भूम्यां वसति माधवः ।

आत्मबोधोदधिं स्वच्छं योगिनं नौमि भार्गवम् ॥

यस्मादेतज्जगत्सर्वं जायते यत्र लीलया । स्थितिं प्राप्नोति देवेशं जामदग्न्यं नमाम्यहम् ॥

यस्य भ्रूभङ्गमात्रेण ब्रह्माद्याः सकलाः सुराः । शतवारं भवन्यत्र भवन्ति न भवन्ति च ॥

तप उग्रं चचारादौ यमुद्दिश्य च रेणुका । आद्या शक्तिर्महादेवी रामं तं प्रणमाम्यहम् ॥

श्रीपरशुरामाय नमः । प्रार्थनां समर्पयामि ॥

अर्थात्- जिनके नाम का उच्चारण करने मात्र से प्राणी संसार के कष्टों (जन्म-मरण के चक्र) को प्राप्त नहीं होता, और जिनके चरणों की पूजा करने से मनचाही सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, मैं उन भृगुवंशी परशुराम जी को नमन करता हूँ। जो साक्षात् माधव होकर भी समस्त इच्छाओं से रहित (निःस्पृह) होकर सदैव इस पृथ्वी पर निवास करते हैं, जो आत्मज्ञान के स्वच्छ सागर के समान हैं, उन योगीश्वर भार्गव को मैं प्रणाम करता हूँ। जिनसे यह सम्पूर्ण जगत उत्पन्न होता है और जिनमें लीलापूर्वक स्थिति (पालन) पाता है, उन देवों के देव जमदग्निपुत्र परशुराम को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनकी भौंहों के तिरछे होने मात्र से ब्रह्मा आदि समस्त देवता सौ बार उत्पन्न होते हैं और विलीन हो जाते हैं, उन सर्वसमर्थ प्रभु को मैं नमन करता हूँ। आद्याशक्ति महादेवी रेणुका ने प्रारंभ में जिन्हें (पुत्र रूप में) प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की थी, मैं उन भगवान राम (परशुराम) को प्रणाम करता हूँ॥

प्रदक्षिणा-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि॥

नमस्कार-

उरसा शिरसा दृष्टया मनसा वचसा तथा । पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां साष्टांगञ्च नमोस्तुते ॥

श्रीपरशुरामाय नमः । नमस्कारान् समर्पयामि ॥

क्षमा प्रार्थना-

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।

पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥

समर्पण-

साधु वासाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।

तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥

इस मन्त्र का उच्चारण कर फिर प्रभु के दक्षिण हस्त में शंख का जल अर्पित कर दे।

पूर्णता की प्रार्थना-

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

अच्युताय नम:, अच्युताय नम:, अच्युताय नम:॥

शङ्ख जल भ्रमण-

अब निम्न मन्त्र के द्वारा शङ्ख को श्रीभगवान् के ऊपर से चार बार घुमाकर
उसका जल अपने ऊपर तथा उपस्थित अन्य जनों के ऊपर भी छिड़के :

शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि । अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥

अब दाहिने हाथ में जल लेकर "अनेन यथाज्ञानोपचारकृतेन पूजनेन श्रीपरशुराम: प्रीयतां न मम" कहकर जल छोड़ दे।

विसर्जन-

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ ! स्वस्थाने परमेश्वर । मम पूजां गृहीत्वेमां पुनरागमनाय च ॥

श्रीपरशुरामाय नमः। विसर्जयामि, विसर्जनार्थे अक्षतान् पुष्पं च समर्पयामि॥

अब हाथ में अक्षत लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करे :

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च ॥

अब इन अक्षतो को गणेश जी आदि पर छोड़कर सभी आवाहित देवताओं का विसर्जन करे ।

अब निम्न वर्णित विधि के अनुसार आसन त्याग करे-

अब आसन का एक कोना उठाकर उसके नीचे दो बूँद जल डाल दे तदनन्तर उस जल से एक बार **श्री इन्द्राय नमः** और एक बार **श्री शक्राय नमः** कहकर अपने माथे पर तिलक कर ले॥

अब निम्न मन्त्र उच्चारित कर प्रभु के चरणामृत का पान करे। चरणामृत को किसी पात्र में लेकर ही ग्रहण करें क्योंकि पद्म पुराण अनुसार सीधे हाथ से चरणामृत पीने से भारी पाप लगता है तथा चरणामृत धरती पर भी न गिरने दे।

चरणामृत पान-

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

तुलसी ग्रहण-

तदनन्तर प्रभु को अर्पित एवं भोग लगाया गया तुलसीदल निम्न मन्त्र से ग्रहण करना चाहिये, **श्रीशांडिल्य संहिता के अनुसार** श्रीभगवान् का प्रसाद प्रथमत: अन्य भक्तों को वितरण करके उसके बाद ही स्वयं ग्रहण करना चाहिए॥

पूजनानन्तरं विष्णोरर्पितं तुलसीदलम् । भक्षयेद्देहशुद्ध्यर्थं चान्द्रायणशताधिकम् ॥

॥ इति श्री परशुराम पूजन विधि ॥